पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र [F–10]

इकाई–1 : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

पर्यावरण अध्ययन एक बहुआयामी विषय है। आज भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण अध्ययन की आवश्यकता और इसके महत्व को महसूस की जा रही है। सौरमंडल के सभी ग्रहों में से पृथ्वी ही एक मात्र एक ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन पाया जाता है। क्योंकि यहाँ का वातावरणीय परिस्थितियाँ जीवन-प्रक्रियाओं को संचालित करने के लिए उपयुक्त है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, मानव जीवन का अपना एक परिवेश और अपने आस-पास के वातावरण पर्यावरण से एक अटूट गहरा संबंध है। हमारे सारे क्रियाकलाप, सामाजिक जीवन, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण पर निर्धारित है। इस धरती पर जितने भी प्राणी है, अपना दैनिक जीवन व्यतीत करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं शुद्ध हवा, पानी, भोजन, ईंधन, घर इत्यादि हर चीजों के लिए हम पर्यावरण पर निर्भर होते है। हमारे आस-पास निकट तथा दूर विद्यमान मानव निर्मित पदार्थों सहित

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

सजीव और निर्जीव पदार्थ मानवीय पर्यावरण के दो मुख्य पहलु है

i) प्राकृतिक पर्यावरण - जिसमें पेड़-पौधा, जानवर पृथ्वी, आकाश, सूर्य, वायु, जल, ग्रह, इत्यादि सम्मलित है।

ii) सामाजिक पर्यावरण - जिसमें घर और परिवार, परम्पराएं, रीति-रिवाज, रहन-सहन की स्थितियाँ, व्यवस्थाएं प्रत्येक वस्तुएं सम्मलित है।

पर्यावरण के ये दोनो घटक एक दूसरे के साथ अंतः क्रिया करते है।

* प्रकृति एवं क्षेत्र

प्रत्येक क्षेत्र की अपनी दक्षताएं होती है। यहाँ पर्यावरण अध्ययन के तीन प्रमुख क्षेत्र है, जो शैक्षणिक उद्देश्यों के आधार पर है-

i) संज्ञानात्मक क्षेत्र (मानसिक या बौद्धिक पक्ष)
ii) मनोगत्यात्मक क्षेत्र (हस्तप्रयोगी कौशल)
iii) भावनात्मक क्षेत्र (संवेगात्मक क्षेत्र)

i) संज्ञानात्मक क्षेत्र में अपेक्षित चार व्यवहारगत प्रतिफलों के स्तर निम्न प्रकार है -

- ज्ञान (पहचान, स्मरण, तथ्यों आंकड़ो आदि का ज्ञान)
- समझ बोध (चिंतन प्रक्रिया, स्पष्टीकरण, वर्गीकरण)
- अनुप्रयोग (अर्जित ज्ञान, पूर्वकथन)
- सर्जनात्मक (मौलिक नवीन कल्पना)

ii) मनोगत्यात्मक क्षेत्र जिसे हस्तप्रयोगी कौशल

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

या शारीरिक कौशल भी कहा गया है, पर्यावरण के अध्ययन में बहुत महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में लक्ष्य प्राप्ति हेतु शिक्षकों को हमेशा बाल-केंद्रित, क्रिया-आधारित उपागम निश्चित कराने चाहिए जैसे - चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र, मूर्ति या मॉडल तैयार करना और समय-समय पर छात्रों को उचित सहायता व आवश्यकतानुरूप संसाधन शिक्षक द्वारा उपलब्ध कराने जाने चाहिए जिससे बच्चों को प्रोत्साहन मिले और हमेशा उनके कार्य में रूचि बनी रहे।

iii) भावनात्मक क्षेत्र के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षक के अनुभव द्वारा उद्देश्य हमेशा सरल, स्पष्ट, रूचिकर और वास्तविक होनी चाहिए। जिससे विद्यार्थी पर्यावरण से भावनात्मक रूप से जुड़े ताकि उनका जीवनशैली पर्यावरण हितैषी हो।

* उद्देश्य व महत्व

पर्यावरण अध्ययन सिर्फ इसलिए महत्वपूर्ण नही है कि इसके द्वारा हमें उस जगत की जानकारी मिलती है। जिसमें हम रहते हैं बल्कि इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इससे हमें आधुनिक संसार की गंभीर समस्याओं से अधिक प्रभावी ढंग से निपटने में सहायता मिलती है।

प्राथमिक शिक्षा। कक्षाओं से ही शिक्षा का आधार पर्यावरण रखने का उद्देश्य यह है कि हम जिस वातावरण और पर्यावरण में रहते हैं उससे विद्यार्थी अवगत हो जाएंगे, शुद्ध खुली हवा को महसूस करना, शुद्ध पानी का महत्व समझना,

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

संसाधनों का उपयोगिता का ज्ञान प्राथमिक स्तर पर दिया जाना बहुत महत्वपूर्ण है।

* राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2008 के संदर्भ में पर्यावरण अध्ययन

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 बच्चों को स्कूली जीवन के साथ-साथ बाहर के जीवन के साथ जोड़ने की बात का समर्थन करता है। पर्यावरण अध्ययन के विषय में यह बात शत-प्रतिशत सही है। पर्यावरण अध्ययन का ध्येय सिर्फ सचेतना का विकास करना नहीं है बल्कि पर्यावरण के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक ~~पह~~ पहलुओं से जुड़ना और आवश्यक कौशलों का विकास करना भी है, ताकि उनसे संबंधित समस्याओं का समाधान भी हो सके। यह तब तक संभव नहीं है, जब तक बच्चे अपने परिवेश से न जुड़े। इसके लिए यह जरूरी है कि हमारी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया व विभिन्न क्रियाकलाप उन्हें भरपूर अवसर प्रदान करें, ताकि ~~उनसे संबंधित समस्याओं का समाधान भी हो सके। यह तब तक संभव नहीं है, जब तक बच्चे अपने परिवेश से न जुड़े। इसके लिए यह जरूरी है कि हमारी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया व विभिन्न~~ वे पर्यावरण से जुड़े मुद्दों की पहचान कर सके। उनका अपने रोजमर्रा के ~~पर्यावरण~~ जीवन पर प्रभाव देखकर न केवल जागरूक हो, बल्कि समालोचनात्मक चिंतन कर विभिन्न कौशलों द्वारा उन्हें

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। अतः प्राथमिक स्तर पर इसकी शुरूआत बच्चे के निकटतम परिवेश से होनी चाहिए। ऐसे शिक्षण प्रणाली से गुजरकर बच्चे बड़े होकर किसी एक राज्य, देश के जागरूक नागरिक ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के सुरक्षित भविष्य में योगदान करते है।

NCF 2005 के निर्माण के बाद SCERT ने भी पर्यावरण अध्ययन की महत्व को समझे और बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 तैयार किया गया।

* पर्यावरण अध्ययन एकीकृत रूप से (एकीकृत उपागम)

विभिन्न विषय इस ब्रह्मांड या संसार को समझने में हमारी सहायता करते है। परंतु पिछले कई वर्षों से इन विषयों की शिक्षण अधिगम पद्धति तथा कक्षा की वास्तविक प्रक्रियाओं को देखने से लगता है कि वे अपने मौलिक उद्देश्यों से विचलित हुए हैं। शिक्षक जब किसी विशेष विषय को पढ़ाते हैं, तो वो विषय से संबंधित पाठ्यसामग्री को एक पृथक * ज्ञान भंडार के रूप में लेते है और विषय के ज्ञान को विद्यार्थी को देते समय इसी धारणा के साथ ज्ञान-संप्रेषण के कार्य को संपन्न करते है। इस प्रक्रिया में वे विद्यार्थी में विभिन्न विषयों, उप-विषयों तथा उनसे संबंधित प्रत्ययों / धारणाओं में आपसी संबंध विकसित करने में असफल होते है। हम जानते हैं कि भिन्न-भिन्न विषय (पर्यावरण) को समझने

में सहायता करते है, फिर भी 'पर्यावरण अध्ययन' को पाठ्यक्रम या विषय के रूप में नहीं बल्कि पर्यावरण की जानकारी हेतु एक पद्धति के रूप में लिया जाता है। इसके आलावा किसी एक तथ्य को भिन्न-भिन्न विषयों परिप्रेक्ष्यों, जो विभिन्न विषयों के अंतर्गत आते है के माध्यम से भी समझा जा सकता है।

उदाहरण के तौर पर अगर हम पानी को ले ले तो पानी की संरचना और विशेषता विज्ञान द्वारा समझा जाता है, पानी की कमि या पानी से होने वाली आपदा भूगोल में पढ़ी जाती है, पानी जीवनयापन की वस्तु जीव-विज्ञान द्वारा और पानी से संबंधित सौंदर्य कला द्वारा समझा जाता है। अत: यह स्पष्ट है कि यद्यपि पर्यावरणीय मुद्दे तथा सरोकार बिल्कुल सरल लगते है, परन्तु वास्तव में यह बहुत जटिल है। इन सबको समझने के लिए मूल विषयों का जानकारी आवश्यक है। यह और भी महत्वपूर्ण है कि इन मुद्दों को पृथक-पृथक विषयों के द्वारा न समझकर, उनके अंतर्गम को एक एकीकृत परिप्रेक्ष्य में लिया जाए। हम सब जानते है कि बच्चे पर्यावरण को संपूर्ण रूप में देखते है और पर्यावरण बातों को एकीकृत रूप में विकसित करते है यद्यपि पर्यावरण के लिए एकीकृत पद्धति 2000 में ही मान लिया गया था परंतु इसक संस्तुत कुछ समय पूर्व 2005 में किया गया।